

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी०एड० छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

प्रियंका पाण्डेय एवं अजय कुमार दुबे

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.327>

शैक्षिक प्रौद्योगिकी शिक्षा को कई मायनों में प्रभावित करती है। नये प्रौद्योगिकी क्षेत्र—जैसे मशीन लर्निंग, ब्लॉक चेन, स्मार्ट बोर्ड, हस्त संचालित कम्प्यूटरिंग बोर्ड और अन्य प्रकार के साफ्टवेयर द्वारा न केवल यह परिवर्तन होगा कि छात्र क्या सीखता है वरन यह भी परिवर्तन होगा कि, वो कैसे सीखता है। इस प्रकार इन क्षेत्रों में भविष्य में भी प्रौद्योगिकी एवं शैक्षिक दोनों दृष्टि से व्यापक शोध की आवश्यकता होगी। शैक्षिक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता शिक्षण अधिगम और आंकलन प्रक्रियाओं को बेहतर बनाना, शिक्षकों की तैयारी एवं व्यवसायिक विकास में सहयोग करना, शैक्षिक पहुच को बढ़ाना, शैक्षिक नियोजन, प्रबन्धन एवं प्रशासन को सरल एवं व्यवस्थित करना है। विगत वर्षों में अनेक शोधों के द्वारा यह समझने और जानने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार की अभिवृत्ति वाले शिक्षक अच्छा एवं प्रभावशाली शिक्षण करते हैं। अभिवृत्ति किसी परिस्थिति, व्यक्ति या वस्तु के प्रति किसी विशेष ढंग से किसी विशेष सघनता से प्रतिक्रिया करने की तत्परता है। प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा को उन्नत बनाने के लिए विकसित भारत 2047 के तहत AI स्कूलों में पढ़ाया जाना सुनिश्चित किया गया है। वैश्विक AI गोष्ठी 2026 भारत में सम्पन्न हुई है जिसमें भारत AI क्षमता को दुनिया ने देखा भारत सरकार द्वारा बजट 2026–2027 में 139289 करोड़ रुपये शिक्षा के लिए दिया गया जिसमें से शिक्षा में AI को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ रुपये से AI सेन्टर बनाया जायेगा। 5 बड़े राष्ट्रीय स्तर के कौशल केन्द्र विकसित किये जायेंगे जो ग्लोबल (वैश्विक) पार्टनरशिप में होगा।

वर्तमान में India AI Future skill mission के तहत 8.6 लाख विद्यार्थियों में AI पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है ये सब विकसित भारत 2047 के तहत ही हो रहा है।

शोध का औचित्य

वर्तमान समय शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी क्रांति का युग है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षण—अधिगम की पारंपरिक पद्धतियों में आमूल—चूल परिवर्तन कर दिया है। शिक्षक की भूमिका अब केवल ज्ञान प्रदाता की न होकर एक 'सुविधादाता की हो गई है, जो शिक्षार्थियों को तकनीकी उपकरणों के माध्यम से ज्ञान अर्जन के लिए प्रेरित करता है।

ऐसी स्थिति में शिक्षण की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक तथा भावी शिक्षक शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति कितनी सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। अभिवृत्ति एक प्रत्यय है जो किसी सामान्य—पारिस्थिति में किसी व्यक्ति द्वारा किये गये व्यवहारों के मानसिक पत्र का संकेत देता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति तत्परता और तैयारी की दशा है, जिसमें व्यक्ति किसी प्रकार के वातावरण में व्यवहार करते हैं।

- शोधार्थी, शिक्षक शिक्षा विभाग, टी०डी०पी०जी० कालेज, जौनपुर (उ०प्र०)
- प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, टी०डी०पी०जी० कालेज, जौनपुर (उ०प्र०)
(डीन, शिक्षा संकाय, वी०ब० सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०)

भारत सरकार द्वारा स्किल इण्डिया हब (National Skill Development Corporation) के माध्यम से भारत में बेरोजगार युवा लोगों के लिए 3 साल तक एआई डिजिटल से ट्रेनिंग लेने के बाद 18 साल तक के युवाओं को रोजगार देने के लिए कोडिंग/डिजिटल मार्केटिंग आदि के लिए नवीन अवसर प्रदान किये जा रहे हैं।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से न केवल शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है, बल्कि शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी, रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता को भी प्रोत्साहन मिलता है। किंतु इसका प्रभाव तभी संभव है जब शिक्षक स्वयं इसके प्रति उत्साही, जागरूक और सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हों। इसलिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत बी०एड० छात्राध्यापकों की तकनीकी दक्षता और दृष्टिकोण को जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

समस्या का कथन—

“ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन”।

शोध के उद्देश्य—

- 1- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड. छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
- 2- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी. एड. छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति में अंतर की सार्थकता ज्ञात करना।

परिकल्पना

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी० एड० छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि—

प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण करने हेतु वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या—

उत्तर प्रदेश के बी० एड० कार्यक्रम में अध्ययनरत समस्त छात्राध्यापिका शोध कार्य की जनसंख्या हैं।

न्यायदर्श—

वाराणसी मण्डल के महाविद्यालयों में बी० एड० कार्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग के 300 छात्राध्यापिकाओं (150 ग्रामीण, 150 शहरी) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यायदर्शन चयन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण—

स्वनिर्मित शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

परिणाम—

तालिका : ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी० एड० छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति की अन्तर की सार्थकता :

क्षेत्र अनुपात	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मात्रा	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
ग्रामीण	150	252.09	27.505	298	2.040	0.05 स्तर पर सार्थक है
शहरी	150	258.92	30.444			

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के बी० एड० छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 252.09 तथा मानक विचलन 27.505 पाया गया है, जबकि शहरी क्षेत्र के बी० एड० छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 258.92 तथा मानक विचलन 30.444 पाया गया है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R. Test) परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका मान 2.040 प्राप्त हुआ है जो की 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को भी स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार का परिणाम आने का संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र की बी.एड. छात्राध्यापिकाएँ प्रायः तकनीकी साधनों से पहले से ही परिचित होती हैं और वे इन्हें सामान्य जीवन का हिस्सा मानती हैं। उनके लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी कोई नवीन या विशेष आकर्षण का विषय नहीं रह जाता, इसलिए उनकी अभिवृत्ति अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र की छात्राध्यापिकाओं के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी अपेक्षाकृत नया अनुभव होता है, जिससे उनमें इसके प्रति जिज्ञासा, रुचि और सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक प्रकट होता है। इस भिन्नता के कारण शहरी क्षेत्र की छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की अपेक्षा कम पाई जा सकती है।

शैक्षिक निहितार्थ—

अध्ययन के विश्लेषण करने के पश्चात निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ को सम्मिलित किया जा सकता है। कक्षा शिक्षण व्यवहार किस सीमा तक एक दूसरे से संबंधित है कक्षा शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सकारात्मक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए छात्राध्यापको की सहायता किया जा सकेगा।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष से छात्राध्यापकों की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति एवं उनके कक्षा शिक्षण व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाया जा सकता है। इस शोध के माध्यम से यह ज्ञात होगा कि छात्राध्यापकों की शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके कक्षा शिक्षण व्यवहार किस सीमा तक एक दूसरे से संबंधित है।

शहरी क्षेत्र की बी.एड. छात्राध्यापिकाएं पहले से ही टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन, स्मार्ट कक्षाओं से परिचित होने के कारण इनके प्रति जिज्ञासा का भाव कम दिखाई देता है जबकि ग्रामीण बी.एड. छात्राध्यापिकाओं में रुचि, जिज्ञासा, सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक पाया जाता है। अंतः यह कहा जा सकता है कि— शहरी क्षेत्र की छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की अपेक्षा कम पाई जाती है।

2026 में भारत में AI स्कूल से लेकर कॉलेज तक गाँव से लेकर शहर तक पहुँचा दिया है। अब देश के प्रत्येक बच्चा विकसित भारत 2047 के तहत AI सिखेगा और भारत आर्टिफिसियल इन्टेलिजेंस में दुनिया नितृत्व करेगा। वर्तमान युग मशनी एवं मानव के संयुक्त सहयोग का परिणाम होने वाला है जिसमें भारत का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत हो रहा है। वर्तमान गोरखपुर, लखनऊ, शिमला, पटना जैसे शहरों में AI डाटा लैब भी तैयार की जा रही है।

सन्दर्भ सूची

- 1- अग्रवाल, जे०सी०, शैक्षिक तकनीक तथा प्रबन्ध के मूल तत्त्व, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2008
- 2- अशोक, "ए स्टडी ऑन एजुकेशन अचीवमेण्ट स्टडी हैबिट इन्टेलीजेंस एण्ड सोशल इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ द बी०एड० स्टूडेन्ट्स ऑफ द पूर्वांचल विश्वविद्यालय पी-एच०डी० एजुकेशन", पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 2011.
- 3- गुप्ता, एस०पी०, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, : सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- 4- गुप्ता, एस०पी० शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियाँ, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- 5- कपिल, एच०के०, अनुसंधान की विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, 4/220, कचहरीघाट आगरा, 1996
- 6- कुलश्रेष्ठ, एस०पी०, शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- 7- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार।